शक्तिपीठ के रूप में काशी

डा. कमला पाण्डेय

''मनोनिवृत्तिः परमोपशान्तिः सा तीर्थवर्य्या मणिकर्णिका वै।
ज्ञानप्रवाहा विमला हि गङ्गा, सा काशिकाऽहं निजबोधरूपा''॥[1]

काशी के विषय में आदि शङ्कराचार्य के ये उद्गार उसकी आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता के सर्वथा अनुकूल है। वास्तव में भगवान् भूतभावन की नगरी काशी वह शक्ति है जो अपनी आत्मिक चेतना से न केवल भारतवर्ष को अपितु सम्पूर्ण भूमण्डल को आलोकित करने में समर्थ है। भौगोलिक दृष्टि से काशी की संरचना शिवलिङ्ग जैसी है। पञ्चक्रोश की परिधि तक विस्तृत, असि वरणा के मध्य विराजमान वाराणसी के प्रान्त भाग में ज्ञान-प्रवाह श्री गंगा कल्लोलित हैं। उत्तरवाहिनी विमला गङ्गा के साथ काशी का यह संयोग उसे शक्तिपीठ का गौरव प्रदान कर रहा है। क्योंकि श्रीगङ्गा वह अपूर्व शक्ति हैं जिनकी चिन्मयधारा से प्रक्षालित तट तीर्थ बन जाते हैं, कङ्कड़ शंकर बन जाते हैं। यद् वा लिङ्गात्मक काशी शिवस्वरूपिणी है, उसके मस्तक पर अर्धचन्द्राकार श्रीगंगा विराजमान हैं। वस्तुतः सम्पूर्ण काशी ही शिव-शक्ति का अपूर्व समन्वय है। शक्ति के बिना शिव शिव नहीं; अतः शिव को शिवत्व प्रदान करने वाली काशी शक्ति भी है और शक्तिपीठ भी।

पीठ का शब्दिक अर्थ है बैठने का स्थान। जहाँ शक्ति अपने विग्रह के माध्यम से चिन्मय प्रकाश बिखेर रही है वह पीठ है। पौराणिक मान्यता के अनुसार दक्ष यज्ञ में देह त्याग करने वाली सती के तत्तद् अङ्गों का निपात जहाँ-जहाँ हुआ वे वे पुण्य स्थल शक्तिपीठ हो गये। **तन्त्र चूड़ामणि** के अनुसार इक्यावन एवं **देवी भागवत** और **मत्स्यपुराण** के अनुसार एक सौ आठ शक्तिपीठों का उल्लेख है।[2]

शक्तिपीठ के रहस्य पर आलोकपात करते हुए स्वामी करपात्री जी महाराज कहते हैं -''महामाया द्वारा ही परब्रह्म से विश्व की सृष्टि होती है। सृष्टि हो जाने पर भी उनके विस्तार की आशा तब तक नहीं होती जब तक चेतन पुरुष की उसमें आसक्ति न हो महामाया ने शिव को अधीन किया। जैसे निर्विकार चैतन्य शक्ति के योग से साकार विग्रह धारण करता है वैसे ही शक्ति भी अधिष्ठान चैतन्य युक्त साकार विग्रह धारण करती है। अधिष्ठान चैतन्य सहित महाशक्ति का उस लीला विग्रह सती शरीर से तिरोहित हो जाना ही सती का मरना है।''[3]

जगत्कल्याण की दृष्टि से शंकर उस शरीर पर मोहित थे, किन्तु लोक कल्याण की भावना को केन्द्र में रखकर ही देवताओं और विष्णु ने अनन्त शक्तियों की केन्द्रभूत महाशक्ति के अधिष्ठान भूत देह के अवयवों को तत्तद् स्थानों पर गिराया। वे स्थल पीठ हो गये। उन पीठों पर साधक शक्ति की उपासना कर सिद्धि प्राप्त करते हैं।[4]

अपि च, प्रणवात्मक ब्रह्म सती शरीर रूप में सम्पूर्ण वाङ्मय के मूलभूत इक्यावन वर्णों में व्यक्त होता है। अ से क्ष तक इक्यावन वर्णों की माला सती के अंगों की प्रतीक है।[5]

तन्त्र चूड़ामणि के अनुसार वाराणसी में देवी के मणि कुण्डल का निपात हुआ। वह स्थल मणिकर्णिका तीर्थ बन गया। यहाँ की अधिष्ठात्री देवी विशालाक्षी और देवता कालभैरव हुए[6]। काशी जैसे धाम में यह तीर्थ अपनी अपूर्व शक्ति से समन्वित हो गया, अपनी चिन्मयता से मणिकर्णिका मुक्ति प्रदायिका बन गई। मृत्यु के उपरान्त जीव को तारकमन्त्र का उपदेश विश्वेश्वर इसी तीर्थ में आकर देते हैं।

दूसरी मान्यता के अनुसार काशिका में स्तनों का पतन हुआ। वहाँ काशिका पीठ हुआ। वहाँ से 'आ'कार उत्पन्न

हुआ। सती के स्तनों से असि वरणा दो धारायें निकलीं। असि तीर पर दक्षिण सारनाथ एवं वरणा के तीर पर उत्तर सारनाथ उपपीठ हैं।[7]

काशी लघु भारत है। भारत में जितने तीर्थ हैं उनका न्यूनाधिक समावेश काशी में है। भारत के चारों कोनों में स्थित चार धाम[8], सप्तपुरियां[9], छप्पन विनायक[10], द्वादश आदित्यों[11] का निवास काशी में है। जिस प्रकार सम्पूर्ण भारत को धार्मिक एकसूत्रता में बाँधने के लिये द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग[12] उद्भूत हुए, उसी प्रकार सम्पूर्ण भारत में स्थित देवी के प्रधान बारह पीठ काशी में स्थापित हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सती के निपतित अंग का आलोक वाराणसी में जहाँ-जहाँ विच्छुरित हुआ, वहाँ शक्ति पीठ हो गये।

त्रिपुरा रहस्य के अनुसार भारत में देवी के बारह प्रधान पीठ हैं—

काञ्चीपुरे तु कामाक्षी, मलये भ्रामरी तथा।
केरले तु कुमारी सा, अम्बाऽऽनर्तेषु संस्थिता।।
करवीरे महालक्ष्मी, कालिका मालवेषु सा।
प्रयागे ललिता देवी विन्ध्ये विन्ध्य निवासिनी।।
वाराणस्यां विशालाक्षी, गयायां मङ्गलावती।
बङ्गेषु सुन्तरी देवी नेपाले गुह्यकेश्वरी।।
इति द्वादश रूपेण संस्थिता भारते शिवा।।[13]

उक्त द्वादश देवी पीठों की वाराणसी में अवस्थिति इस प्रकार है-

वाराणसी में द्वादश देवी पीठ

	भारत		वाराणसी	
	देवी	तीर्थस्थान	देवी	तीर्थ स्थान
1.	कामाक्षी	काञ्चीपुर (आसाम)	कामाख्या	कमच्छा मोहल्ले में
2.	भ्रामरी* (चामुण्डा या भेरुण्डा)	मलय (मैसूर)	चामुण्डा (महिषासुर मर्दिनी)	लोलार्क कुण्ड के पास भदैनी, बी 2/18 के सामना
3.	(कन्या) कुमारी	केरल	कुमारी	मोहल्ला कश्मीरीमल कलश कूप के ऊपर सी.के. 7/102 में
4.	अम्बा	गुजरात (अर्बुदाचल)	जगदम्बिका (महालक्ष्मी) अम्बिका	लक्ष्मीकुण्ड डी. 52/40 में मंगलागौरी में
5.	महालक्ष्मी	करवीर (कोल्हापुर)	महालक्ष्मी	लक्ष्मीकुण्ड, लक्सा
6.	कालिका	मालवा (उज्जैन)	काली	कालिका गली
7.	ललिता (अलोपी)	प्रयाग	ललिता	ललिता घाट

* "मलये भ्रामरी तथा" से सम्भवत: मैसूर की प्रसिद्ध चामुण्डा देवी ही अभिप्रेत हैं। चामुण्डा देवी को यहाँ की भाषा में भेरुण्डा कहा गया है जो भ्रामरी का ही रूपान्तरण हो सकता है। कालान्तर में साम्यबलात् भेरुण्डा बन गया हो। (द्र. कल्याण-शक्त्यंक पृ. 643 अगस्त 1934/1-97)

8.	विन्ध्यवासिनी	विन्ध्याचल	विन्ध्यवासिनी	संकटा मंदिर के बाहर सी.के. 2/23 में
9.	विशालाक्षी	वाराणसी		मीरघाट डी. 3/85
10.	मंगलावती	गया	मङ्गलागौरी	पंचगंगा घाट के. 24/34 में
11.	* तारा (सुन्दरी)	तारापीठ, बंगाल	तारा	ललिता घाट डी. 1/58
12.	** गुह्यकेश्वरी	नेपाल	महामाया	दुर्गा मन्दिर बी. 27/2 में

पौराणिक नगरी काशी में शक्ति त्रिवेणी की दुर्लभ संरचना अनायास ही बन पड़ी है। असि, वरणा और श्रीगङ्गा का त्रिकोण वाराणसी के आध्यात्मिक वैभव का संवाहक है। पुन: श्रीगङ्गा, मणिकर्णिका और अन्नपूर्णा की अनुपम त्रिपुटी काशी को मुक्ति धाम बना रही है। इसके अतिरिक्त **मार्कण्डेय पुराणोक्त** महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के चरित्र त्रय काशी में क्रमश: श्री दुर्गाजी, महालक्ष्मी (लक्ष्मीकुण्ड, लक्सा) तथा वागीश्वरी (जैतपुरा) हैं।[14] लक्ष्मीकुण्ड स्थित महालक्ष्मी के साथ उसी मन्दिर में महाकाली और महासरस्वती के विग्रह स्थापित हैं अत: यहाँ पर भी एक त्रिकोण भी निर्मित है। इन त्रिकोणों के मध्य तत्तद् लिङ्गों की अवस्थिति मानने पर काशी की परिकल्पना श्रीचक्राङ्कित शक्तिपीठ के रूप में भी की जा सकती है।

असि वरणा के मध्य विराजमान इस मोक्ष दायिका पुरी की अधिष्ठात्री स्वयं वाराणसी देवी हैं।[15] काशी भी अपने विग्रह के रूप में यहाँ प्रतिष्ठित है।[16] इसके अतिरिक्त पुराणोक्त नवदुर्गा, नव गौरी, नवशक्ति, नव मातृका, 64 योगिनी, दस महादेवी, 44 चण्डीपीठ तथा 39 जगदम्बा महायात्रा इस पुण्यमयी धरती की गरिमा का बखान कर रहे हैं। तन्त्र प्रसिद्ध दस महाविद्याओं के पीठ भी यहाँ उपस्थित हैं। इसी प्रकार महापीठ यात्रा, जलतीर्थ पीठ तथा विविध शक्तियों के निर्धारित स्थान काशी खण्ड में उल्लिखित हैं जिनमें वर्तमान नगरीकरण के फलस्वरूप कुछ लुप्त हो गये हैं और कुछ दर्शनीय स्थल के रूप में विराजमान हैं।

सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सम्मानित इन शक्तिपीठों का विशेष विवरण यहाँ क्रमश: देना अपेक्षित है—

(1) **नवदुर्गा–मार्कण्डेय पुराण** के देवी कवच में नवदुर्गा का पाठ इस प्रकार प्रसिद्ध है—

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा: प्रकीर्तिता:॥ देवीकवच, 3-5

---

* वाराणसी में तारा सुन्दरी के चार पीठ हैं—

1. बंगाली टोला रानी भवानी द्वारा स्थापित
2. ललिता घाट
3. कालिका की गली में काली जी में दरवाजे के सामने डी. 8/17
4. ब्रह्मनाल में रानी पद्मावती द्वारा स्थापित सी.के. 32/15 में

- पञ्चक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग - काशी माहात्म्य, पृ. 188

** नेपाल की गुह्येश्वरी का दूसरा नाम महामाया है। इनका मन्दिर बागमती के तट पर स्थित है। (कल्याण तीर्थाङ्क पृ. 52)

उपर्युक्त नौ दुर्गा के मन्दिर वाराणसी में तत्तद् स्थल में इस प्रकार है[17]—

1. शैलपुत्री	मढिया घाट, वरणा तट
2. ब्रह्मचारिणी	दुर्गाघाट
3. चित्रघण्टा	लक्खी चौतरा
4. कूष्माण्डा	दुर्गाकुण्ड
5. स्कन्दमाता	वागीश्वरी देवी, जैतपुरा
6. कात्यायनी	सिन्धियाघाट के ऊपर
7. कालरात्रि	कालिका गली
8. महागौरी	अन्नपूर्णा जी
9. सिद्धिदात्री	सिद्धमाता की गली

(2) नवशक्ति

रक्षन्ति क्षेत्रमेतद् वै तथान्या नवशक्तयः।
उपसर्गसहस्त्रेषु ता वै दिग्देवताः क्रमात्॥ (9 काशी खण्ड अ. 72-91 तक)

1. शतनेत्रा (लुप्त), 2. सहस्त्रास्या (लुप्त), 3. अयुतभुजा (लुप्त), 4. अश्वरूढा (जैतपुरा-वागीश्वरी मन्दिर में), 5. गजास्या (लुप्त), 6. त्वरिता (लुप्त), 7. शववाहिनी (लुप्त), 8. विश्वा (विश्वभुजा नाम से प्रसिद्ध-धर्मकूप में), 9. सौभाग्य गौरी (बांसफाटक आदिविश्वेश्वर मन्दिर में)[18]।

(3) नवगौरी

अतः परं प्रवक्ष्यामि गौरी यात्रामनुत्तमाम् (का.खं.अ. 100)

1. मुख निर्मालिका गौरी	(गोप्रेक्ष तीर्थ स्नान) - गायघाट
2. ज्येष्ठा गौरी	(ज्येष्ठा वापी स्थान) - काशीपुरा ज्येष्ठेश्वर
3. सौभाग्य गौरी	(सौभाग्य तीर्थ स्नान) - आदि विश्वनाथ
4. शृंगार गौरी	(ज्ञानवापी स्नान) - मस्जिद के पीछे
5. विशालाक्षी गौरी	(विशाल तीर्थ स्नान) - मीरघाट
6. ललिता गौरी	(ललिता तीर्थ स्नान) - ललिता घाट
7. भवानी गौरी	(भवानी तीर्थ स्नान) - राम मन्दिर - अन्नपूर्णा के बगल में
8. मंगला गौरी	(विन्दु तीर्थ स्नान) - पंचगंगा घाट
9. महालक्ष्मी गौरी	(लक्ष्मी तीर्थ स्नान) - लक्ष्मीकुण्ड, लक्सा।[19]

(4) नव मातृका-ब्राह्मी, माहेश्वरी, ऐन्द्री, वाराही, कौमारी, वैष्णवी, नारसिंही, चर्चिका एवं विकटा।[20]

(5) महादेवी

काशी में दस महादेवियों की यात्रा का विधान है, इन्हें, 'क्षेत्ररक्षणदेवता' कहा गया है। इनकी आराधना से पातकों का नाश होता है। ब्रह्माणी (खालिसपुरा), वैष्णवी (लालघाट), वाराही (मान मन्दिर), रौद्री (लुप्त), नारसिंही (जीव विनायक), कुमारी (कश्मीरी मल), माहेन्द्री (विश्वनाथ की कचहरी के उत्तर), चामुण्डा (भदैनी), चण्डिका (सदर बाजार), विकटा (संकटा जी, सिंधिया घाट के ऊपर)[21]

(6) चण्डी

काशी खण्ड में चौवालीस चण्डी देवियों के पीठ निर्दिष्ट हैं—विशालाक्षी से लेकर दुर्गा जी तक की शक्तियाँ और उनके स्थलों का विस्तार से उल्लेख प्राप्त होता है।[22]

(7) चौसठ योगिनी पीठ

काशी खण्ड के योगिनी माहात्म्य में चौसठ योगिनी पीठों का उल्लेख है। गजानना, सिंहमुखी इत्यादि इन योगिनियों के विग्रह लुप्त हो गये हैं। चौसट्टी घाट में चौसट्टी देवी इन सभी के प्रतीक के रूप में हैं। होली एवं नवरात्र में काशी निवासी यहाँ दर्शन-पूजन करते हैं।[23]

(8) जगदम्बा देवी यात्रा-

काशी खण्ड में ज्वालामुखी आदि 93 देवियों की यात्रा का विधान है। त्रैलोक्य विजया आदि शक्तियाँ काशी के चारों तरफ रहती हैं और आयुध लेकर रक्षा करती हैं। इनके भी अनेक विग्रह लुप्त हो गये हैं।[24]

(9) जलशक्ति पीठ

काशी में जलशक्ति पीठों का महत्त्व भूयश: प्रतिपादित है। सरोवरों और नदियों की स्थली काशी की हर वापी, कूप, तडाग और नदी तीर्थ है। सब तीर्थों की तीर्थ उत्तरवाहिनी श्रीगंगा जी हैं, जिनके बिना काशी काशी नहीं, उनके सान्निध्य से तत्तत् घाट भी तीर्थ बन गये हैं। आदि मणिकर्णिका, मणिकर्णिका, गुहागंगा, (ईश्वरगंगी तालाब), ज्ञानवापी, असि, वरणा, पंचगंगा, सिद्धवापी (लुप्त), ऐतरणी, वैतरणी, (छुतहा अस्पताल के पास), मत्स्योदरी, सरस्वती स्रोत (मणिकर्णिका के उत्तर, गो मठ के सामने गंगा में), मन्दाकिनी तीर्थ (मैदागिन), लक्ष्मीकुण्ड तीर्थ, मातृकुण्ड तीर्थ (लल्लापुरा), अयोध्यापुरी तीर्थ (वरणा स्नान), सरयू तीर्थ (खजुरी गांव में), जन्मभूमि तीर्थ (खजुरी गांव में), मायापुरी तीर्थ (असि संगम), अवन्तिका पुरी तीर्थ (हरतीरथ), काशीपुरी तीर्थ (ललिता घाट), चक्रपुष्करिणी तीर्थ (मणिकर्णिका कुण्ड) तथा गौरी कुण्ड (केदार घाट) हैं। रेवातीर्थ (रेवड़ीतालाब) तथा गोदावरी तीर्थ (गोदौलिया) अब भूमिस्थ हो गये हैं।

(10) महापीठ

काशी कण्ड (अ. 79) में उक्त दस महापीठों में सर्वमंगलादायिनी महापीठ (मंगलागौरी), पञ्चमुद्रा महापीठ (आत्मावीरेश्वर)-सिंधिया घाट), सिद्धपीठ (सिद्धेश्वरी देवी), विरजापीठ (त्रिलोचन घाट) और योगिनी पीठ (चतु:षष्टि योगिनी पीठ) शक्ति महापीठ हैं।[25]

(11) दशमहाविद्या पीठ

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥
बगला सिद्धविद्या च मार्तङ्गी कमलान्विता।
एता दशमहाविद्या: सिद्धविद्या: प्रकीर्तिता:॥

उक्त दश महाविद्याओं की वाराणसी में अवस्थिति इस प्रकार है[26]-

1. तारा देवी	पाण्डेयघाट तारा बाड़ी - रानी भवानी द्वारा स्थापित बी. 24/4
2. काली देवी	काली मठ, लक्ष्मीकुण्ड डी. 5/52
3. कमला देवी	शिखीचण्डी के बगल में लक्ष्मीकुण्ड डी. 5/52 में
4. त्रिपुरा भैरवी	त्रिपुरा भैवरी टी. 52/40
5. षोडशी	राजराजेश्वरी ललिताम्बा डी. 1/58 राजराजेश्वरी मठ, ललिता घाट
6. मातङ्गी	सिद्धेश्वरी देवी सी.के. 7/124 सिद्धेश्वरी मोहल्ला
7. बगला	पीताम्बरा देवी सी.के. 7/124 सिद्धेश्वरी मोहल्ला

तत्रैव विकटा देवी सर्व दु:खौघमोचिनी । काशी ख. अ. 97

समस्त कष्टों को हरने वाली विकटा ही संकटा हैं। इनके मन्दिर में ही छिन्नमस्ता का पीठ था जिसे औरंगजेब ने ध्वस्त कर दिया था। उस समय छिन्नमस्ता की मूर्त्ति जब तक स्थापित नहीं हुई तब तक संकटा जी के दर्शन पूजन का विधान किया गया।

8. छिन्नमस्ता देवी–

वर्तमान में बगला के मन्दिर में ही छिन्नमस्ता का विग्रह भी स्थापित है, छिन्नमस्ता का उल्लेख जङ्गमबाड़ी में भी प्राप्त होता है। रामनगर के दुर्गा मन्दिर में भी भगवती छिन्नमस्ता का भव्य विग्रह स्थापित है।

9. भुवनेश्वरी देवी

संकटा जी के उत्तर अग्नीश्वर के मन्दिर में भुवनेश्वरी पूर्वाभिमुख स्थित हैं। सी.के. 1/21, पटनी टोला।

10. धूमावती–धूपचण्डी 12/34, धूपचण्डी, नाटी इमली

(12) अन्य

उपर्युक्त परिगणनाओं के अतिरिक्त भी काशी पञ्चक्रोशी परिक्रमा के अन्तर्गत द्रौपदी (विश्वनाथ जी हनुमान् मन्दिर अक्षय वट के नीचे), पार्वती (केदार घाट), मोक्ष लक्ष्मी, गजलक्ष्मी (केदार मन्दिर), चित्रग्रीवा (कुमार स्वामी मठ), करन्धमा देवी, चर्ममुण्डा, महारण्डा (लोलार्क कुण्ड, भदैनी), रेणुका (बेलबरिया), प्रतिगौरा (वटुक भैरव, कमच्छा), शिखि चण्डी (लक्ष्मीकुण्ड), मातृदेवी (माता कुण्ड, लल्लापुरा), वराटिका पंचकौडी देवी (दुर्गाजी से पश्चिम), अनसूया देवी (नारद घाट), चित्रांगदेश्वरी (कुमार स्वामी मठ), शान्तिकरी गौरी (ककरहा घाट, वरणा), गायत्री (लहुराबीर भारतधर्म महामंडल), सावित्री (पंचगंगा घाट), शीतला देवी (शीतला घाट, प्रह्लाद घाट), मनसा (केदार घाट) आदि देवियों का उल्लेख है।[27] श्री गङ्गा के विग्रह वच्छराज, निरंजनी घाट, रीवा घाट, शीतला, भोसला, दशाश्वमेध, पंचगङ्गा और मणिकर्णिका में स्थापित है। श्री यमुना मान मन्दिर और दशाश्वमेध में स्थापित हैं।[28]

(13) कुण्डलिनी और काशी

अध्यात्म जगत् में काशी वह स्वयं प्रकाश चिति है जो इडा, पिङ्गला के मध्य सुषुम्ना में स्थित मूलाधारस्थ कुण्डलिनी के रूप में विद्यमान है। असि, वरणा रूपी दो भृकुटियों के सन्धिस्थान में आज्ञाचक्र में विराजमान अविमुक्तेश्वर का निवास है, वही वाराणसी अथवा काशी है।[29] इसी भाव जगत् का भू विन्यास करने के लिए बंगला के राजा जयनारायण घोषाल ने 1814 ई. में गुरुधाम मन्दिर का निर्माण कराया जिसमें तन्त्र साधना के आध्यात्मिक गूढ़तत्त्वों को तथा लघु भारत के तीर्थों को प्रतीकों द्वारा प्रकट किया गया है।

इस मन्दिर का अन्तर्गृह अष्टकोण है जो काशी से क्रमशः मथुरा, मायापुरी, अयोध्या, अवन्तिका, पुरी, कांची एवं गुरुद्वार से अनुचक्रित है। गुरु शिव तत्त्व हैं जिनके आशीर्वाद से ये सप्तपुरियां सम्पूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये अष्ट द्वार विविध भाव के प्रतीक हैं– शिव भाव (अवन्ती, काशी), विष्णु भाव (अयोध्या, मथुरा, पुरी), शक्ति भाव (माया – हरिद्वार)। ये अष्टद्वार अष्टदल कमल, अष्टदिशायें, अष्ट देवी, अष्ट मातृका, अष्टचण्डी एवम् अष्टभैरव के प्रतीक हैं। मन्दिर के भीतर अष्टधातु निर्मित श्रीगुरु (शिव) और उनकी शक्ति सम्मिलित रूप में स्थापित हैं। इस प्रकार यह मन्दिर चिन्मय पीठ का स्वरूप ले लेता है। मन्दिर के अन्तर्गृह की संरचना मानव शरीरस्थ षट्चक्रों के समान है। मूलाधार से प्रारम्भ होकर सहस्रार में पर्यवसित चितिशक्ति का विलय गुरुपादुका (शिव तत्त्व) में होता है। यही गुरुधाम का आध्यात्मिक भू विन्यास है।[30]

परन्तु इतने सूक्ष्म तत्त्वों को मूर्त्तिमान स्वरूप प्रदान करने का यह तन्त्रिका प्रयास पूर्णतः जीर्ण शीर्ण होकर विलीन हो रहा है यह अत्यन्त दुःख का विषय है।

काशी की महिमा का गान जितना भी हो, उतना कम ही है। मुक्ति प्रदायिनी, ज्ञानप्रदा काशी की कृपाप्राप्ति के लिए इस शक्ति पीठ को इन शब्दों से प्रणाम है–

विश्वेशं माधवं ढुण्ढि दण्डपाणिं च भैरम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

सन्दर्भिका

1. शब्दकल्पद्रुम
2. देवी भागवत 7/30/55-84 मत्स्यपुराण 13/26-56
3. शक्तिपीठ रहस्य -स्वामी करपात्री जी-कल्याण तीर्थाङ्क पृ. 526
4. वही पृ. 526
5. वही पृ. 526-27
6. वाराणस्यां विशालाक्षी देवता कालभैरव:।
   मणिकर्णीति विख्याता कुण्डलं च मम श्रुते:।। तन्त्र चू.
7. सिद्धान्त से - शक्ति पीठ का रहस्य - कल्याण तीर्थाङ्क पृ. 523
8. चारधाम - पञ्चक्रोशात्मकज्योतिर्लिङ्ग काशी माहात्म्य, केदार नाथ व्यास रचित, पृ. 165
9. सप्तपुरी - काशी रहस्य अ. 13, वही 166-173
10. छप्पन विनायक - का. खं. अ. 57, वही 90-93
11. काशी खण्ड 47, 48, 49, 50, 51 अध्याय द्रष्टव्य, पंचक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग-काशी मा. पृ. 78-81
12. द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग काशी गौरव पृ. 150-152
13. त्रिपुरा रहस्य - माहात्म्य खण्ड - अ. 48 श्लो 71-74
14. वागीश्वरी की प्राचीन प्रतिमा मन्दिर के नीचे एक पक्की गुफा के भीतर है। इन तीनों शक्तिपीठों के साथ एक-एक कुण्ड की स्थिति काशीखण्ड में उल्लिखित है। दुर्गाकुण्ड और लक्ष्मीकुण्ड तो विद्यमान हैं परन्तु वागीश्वरी कुण्ड पट गया है।
15. ललिताघाट में ललिता देवी मन्दिर के ऊपर मंजिल (मढ़ी) में वाराणसी देवी का विग्रह स्थापित है - डी. 1/67
16. काशीपुरा में काशी देवी के. 62/28 में
17. नव दुर्गा - का.ख.अ. 72
18. नव शक्ति - वही अ. 72
19. नव गौरी - वही अ. 100
20. नव मातृका - सन्मार्ग तीर्थाङ्क पृ. 382
21. महादेवी - काशी ख.अ. 70
22. चण्डी - वही अ. 70, द्र. पञ्चक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग पृ. 156-158
23. चतु:षष्टि - वही पृ. 158-161
24. जगदम्बा - का.ख.अ. 72, वही पृ. 162-164
25. महापीठ - पं. ज्यो. पृ. 122
26. दशमहाविद्यापीठ-काशी गौरव, (ले. स्वामी शिवानन्द सरस्वती), पृ. 147-150
27. द्रष्टव्य - पंच क्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग काशी गौरव
28. वाराणसी के घाट - सांस्कृतिक अध्ययन, डा. हरिशंकर
29. जाबालोपनिषद्, स्कन्द पु.का.खं.अ. 5/26
    रक्षत गङ्गाम् 6/54-60
30. वाराणसी : आर्य तीर्थों का समन्वय स्थल - डा. राणा प्रताप सिंह, सन्मार्ग तीर्थाङ्क 1987

* * *